❑कहाणी

अलेखूं हिटलर

विजयदान देथा

कहाणीकार परिचै

साहित्य रै नोबल पुरस्कार सारू भारत री तरफ सूं नामित विजयदान देथा रौ जलम 1 सितंबर, 1926 नै जोधपुर जिलै रै बोरूंदा गांव में होयौ। वांरी माता रौ नांव सिरूकंवर अर पिता रौ सबळदान देथा हौ। विजयदान देथा 1949 में जसवंत कॉलेज, जोधपुर सूं बी.अे. पास करी। राजस्थानी इणां री काळजयी कृति 'बातां री फुलवाड़ी' (1 सूं 14 भाग) है। 'अलेखूं हिटलर' आपरौ चरचित कहाणी-संग्रै है। विजयदान देथा रै लेखन री सरुआत हिंदी सूं होयी। सै सूं पैली वांरी हिंदी तीन पोथ्यां— 'ऊषा' (कविता-संग्रै), 'बापू के तीन हत्यारे' (आलोचना) अर 'साहित्य और समाज' (निबंध-संग्रै) छपी। इणरै पछै वै पूरी तरै सूं राजस्थानी भासा नैं समरपित होयग्या। आपरै गांव बोरूंदा मांय उणां 'रूपायन' संस्थान री थापना करनै लोक-साहित्य नैं उजास में लावण रौ महताऊ काम करयौ। विजयदान देथा राजस्थानी लोककथावां रै अलावा राजस्थानी लोकगीतां रै संग्रै-संपादन रौ ई काम करयौ अर 'गीतां री फुलवाड़ी' रा छह भाग छपवाया। जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' री कवितावां रौ संकलन आपरै संपादकत्व में 'कलम रौ उस्ताद' नांव सूं छप्यौ। विजयदान देथा 'राजस्थानी-हिंदी कहावत कोश' रौ वृहद् संकलन ई त्यार करयौ जकौ आठ भागां में छप्यौ है।

विजयदान देथा केई पत्र-पत्रिकावां रौ ई संपादन करयौ। वांरै संपादित करयोड़ी पत्रिकावां में 'वाणी' अर 'लोकसंस्क्रति' रा अंक संग्रैजोग है। श्री देथा री केई कहाणियां माथै हिंदी फिल्मां बणी। इणमें मणि कौल रै निरदेसित 'दुविधा' अर प्रकाश झा रै बणायोड़ी 'परणति' खास है। राजस्थानी साहित्य में उम्दा सेवा सारू वांनै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ सैं सूं पैलौ 'राजस्थानी भासा पुरस्कार', भारत सरकार सूं 'पद्मश्री' अर राजस्थान सरकार कांनी सूं 'राजस्थान-रत्न' रौ सम्मान मिळ्यौ। इणां रै टाळ मोकळा पुरस्कार अर सम्मान आपनैं मिळ्या। 87 बरसां री उमर मांय 10 नवंबर, 2013 नैं वांरौ सुरगवास होयग्यौ, पण वांरौ वृहद् साहित्य-सिरजण हमेस राजस्थानी साहित्य री अमोलक धरोड़ बण्यौ रैवैला।

पाठ परिचै

विजयदान देथा री कहाणी 'अलेखूं हिटलर' मरम नैं परसण वाळी कहाणी है। आरथिक सबळता रै पेटै पळ्योड़ी मानवी विद्रूपता रौ खुलासौ आ कहाणी करै। अेक साइकिल सवार रै ओळै-दोळै पूरी कहाणी आगै बधै। अखिल भारतीय साइकल दौड़ में सामल होवणौ अर जीतणौ उण साइकल सवार रौ सपनौ हौ, पण नूंवा मोलायोड़ा ट्रैक्टर सूं तीन-चार सौ री साइकिल आगै कीकर निकळ सकै। वौ साइकल दौड़ में जीतण री खिमता वास्तै ट्रैक्टर सूं आगै निकळनै खुद री परख करणी चावै। आगै निकळ्यां पछै घड़ी अेक राजी होवै, सपना देखै, पण इण दौड़ री होड में ट्रैक्टर सवार च्यारूं ई भाई जिनावरां सूं ई फोरा बणग्या अर आपरै सामंतपणै रै मद अर आतमतोस सारू साइकिल सवार नैं ट्रैक्टर सूं चिगद देवै। नूंवै ट्रैक्टर रौ मोद आ मांयलौ मद ऊगतै धान री पनैर नैं जड़ सूं उखेल न्हाखी।

कहाणीकार इण कहाणी में छोटा-छोटा संवादां में गैरी बात करै। कैवतां अर ओखाणां सूं लड़ालूम भासा घणी सजोरी लागै। गिरज अर ऊंदरां रै ओळावै अत्याचार, अन्याव अर दानवी सुभाव री बात करै। मिनखीचारा नैं जींवतौ राखण वास्तै कहाणीकार सरू में ई कैवै कै वांरा उणियारा मिनखां जैड़ा मिनख, बोली ई मिनखां जैड़ी बोलता अर इणीज बात नैं कहाणी रै अंत में पाछी कैयनै याद दिरावै कै मिनख विणास क्यूं करै, विणास क्यूं चावै? आपरी लांठाई रौ जोर निबळां माथै क्यूं जतावै? इण विणास-लीला नैं हिरोसिमा अर नागासाकी अर महाजुद्धां सूं तोलतौ कहाणीकार हिरदै नैं चीरण वाळौ चित्राम दियौ है। मानवी संवेदनावां अठै मर जावै। कागला अर गिरजड़ां सूं ई बेसी मिनखां रा उणियारा डरावणा लागै। वौ मिनख कागला अर गिरजड़ां सूं ई फोरौ निजर आवण लागै।

आज ई इण दुभांत नैं मेटण री दरकार है। ट्रैक्टर रेत में फिरै तौ खेत खड़ीजै अर धान ऊगै, पण जे वौ ई ट्रैक्टर अेक निरदोस नैं मारण रौ साधन बणै, तौ इणमें उण निरजीव मसीन रौ कांई दोस? उण माथै बैठा सवार उण मसीनरूपी साधन नैं किण भांत परोटै, वौ तौ वांरै ई विवेक माथै है। कहाणीकार विजयदान देथा इण कहाणी रै मारफत मिनख नैं खुद रौ अहम मारनै मानवी भावना जगावण रौ संदेस देवै। वरणन री विसेसता, ठेठ राजस्थानी सबदां री परोट, ध्वन्यात्मक सबदां सूं कहाणी में उठती हलचल पाठक रै मन में ई अेक अजाण अर अदीठ भौ (डर) जगावै। हया-दयाबायरा मिनखां रै वास्तै घिरणा रा भाव आवतां ई नाड़ियां रगत में उकळण लागै। उण अत्याचार नैं मिटावण खातर अेक सावचेत अर साचौ मिनख ऊभौ दीसै, आ इज कहाणी 'अलेखूं हिटलर' री सारथकता है।

अलेखूं हिटलर

वै पांचूं ईं मिनख हा। कोई ऊमर में छोटौ तौ कोई मोटौ। तीस अर पचास बरसां रै बिचाळै सगळां री ऊमर ही। सबसूं लांठोड़ां रै माथा में कठै-कठैई धोळा झांकण लागग्या हा। बाकी सगळां रा ई माथा काळा-भंवर। उणियारा मिनखां जैड़ा ई हा। आंख्यां री ठौड़ आंख्यां। नाक री ठौड़ नाक। दांतां री ठौड़ दांत। हाथ-पगां री ठौड़ हाथ-पग। तांबावरणौ रंग। सगळां रै माथै धोळा पोतिया। किणी रै नवा। किणी रै जूना। लट्ठा रा धोळा झब्बा अर धोळी ई धोतियां। कानां में निगोट सोना री सांकळियां अर मुरकियां। तीन जणां रै गळै काळै डोरां पोयोड़ा सोना रा फूल। सगळा मिनखां री बोली बोलता अर मिनखां री ई हाली हालता।

सगळां रै ई खेती रौ हलीलौ। खेत कमावता अर साखां निपजावता। गवूं, जीरौ, मिरचां, राई, बिराळी के मेथी इत्याद भांत-भांत री साखां रै मिस सूखी धरती री कूख सरसावता। देस री आजादी रै उपरांत लूंठा करसां रै फाचरै आई पण आई। आंधा होय धूड़ में बीज बूरता अर जाणै जित्ती कमाई बीणता!

आं पांचूं मिनखां रै ढंग-ढाळा सूं अैड़ौ लखावतौ कै किणी मां री कूख सूं जलम नीं व्हियां, आं सगळां रौ धरती री कूख सूं ई जलम व्हियौ। कैर, आक, खेजड़ी अर फोगड़ा फळै ज्यूं ई अै तर-तर बधिया अर फळिया। जाणै कुदरत री बनापाती ई आंरौ भाईपौ व्है।

पांचूं ई आगा-नैड़ा कड़ूंबै भाई हा। सीर में ट्रैक्टर मोलावण सारू गांव सूं जोधाणै जावै हा। झब्बां रै हेटै बंडियां रै ऊंडै खीसां में नोटां रौ सावळ जाब्तौ करयोड़ौ हौ। सगळां रै ई मूंडै रिपियां री झीणी आब झबूका भरती ही। धन री जड़ व्है तौ काळजा में ठेट ऊंडी पण उणरै अदीठां फळां री आब उणियारा माथै झळकै।

मोटर सूं उतरतां ई वै खीसां माथै हाथ फेरता पाधरा ट्रैक्टरां री धारयोड़ी दुकान कानी खाथा-खाथ व्हीर व्हिया। सड़क माथै पग टिकतां ई पाछा अजेज उठ जाता। वांरै बस री बात व्हैती तौ काळूड़ी सड़क माथै पग टेकता ई नीं।

नाळ रौ अेक पगोथियौ चढतां ई काच रै मांय रै धणी रौ माथौ सुभट निगै आयौ। पळकती टाट माथै निजर पड़तां ई सगळा अेकण सागै बोल्या, ''सुगनां री बात! खुदोखुद ओमजी ई मांय बैठा है।''

फड़कौ उघाड़तां ई हेम री जात ठाडी हवा रौ लैरकौ आयौ। पांचूं ई अेकण सागै ऊंडा-ऊंडा निस्कारा खांचिया। अेक जणौ बोल्यौ, ''सुरग री मोजां तौ अै लोग माणै। अपां तौ ढोर-डांगरां री जूण भुगतां।''

ओमजी मुळकता थका झीणा अर गळगच सुर में बोल्या, ''थांरी खेती-पाती सूं म्हारी दूकान रौ आटौ-साटौ करता व्हौ तौ ना कोनी।''

''देखौ पिछतावोला!''

''छौ पिछतावतौ।''

सबसूं लांठोड़ौ भाई बोल्यौ, ''चिपतां ई आ पिछतावा री बात कांई छेड़ी। अै तौ आप-आपरा करम अर आप-आपरा काम है। करै जिणनैं ई छाजै।

गुदगुदा रबड़ री कुरसियां माथै बैठतां ई अैड़ौ लखायौ जाणै वै बैठा ई नीं व्है। पतियावण सारू रबड़ में तीन-चार वळा आंगळियां खसोली तद वांनैं बैठण रौ पतियारौ व्हियौ। पछै कुरसियां रै हत्थां माथै खूणियां टेक नचीता व्हैगा।

रामा-सामा करयां उपरांत अेक जणौ कह्यौ, ''सेवट खपतां-खपतां म्हारौ ई नंबर आयग्यौ। आज रौ आज ट्रैक्टर खैंचावौ जकी बात करौ। सांतरौ वार अर सांतरी तिथ रौ मौरत कढाय घर सूं व्हीर व्हियां सदिये-सदिये पाछा गांव बड़ता व्हैणी चावां। म्हे जाणांला कै ट्रैक्टर सारू दो दिन ई सबर नीं व्है।''

छोटकियौ भाई बोल्यौ, ''दो दिन री भलां कही, म्हांनै तौ घड़ी री ई सबर नीं व्है। लुगायां तौ म्हारै वहीर व्हैतां ई मोड़ा माथै ट्रैक्टर बधावण सारू ऊभगी व्हैला। सौ रिपिया वत्ता लागै जिणरी आंट नीं, पण ट्रैक्टर तौ आपनैं अबारू खैंचावणौ पड़सी।''

वांरी खतावळ देख ओमजी मुळकिया। कैवण लागा, ''म्हैं थां गांववाळां री आदत पिछाणूं। ट्रैक्टर कालै ई रेड़ी-रेट कर दियौ! मरजी व्है जणां ट्रैक्टर खांच लीजौ।''

पांचां रै ई खुसी अर हरख रौ पार नीं रह्यौ। जाणै आखी दुनिया रौ राज हाथै लागग्यौ व्है। विचेटियौ भाई ओमजी री पळका पाड़ती टाट साम्हीं देखतौ बोल्यौ, ''बडभागियां रै हाथ भर रौ लिलाड़—पछै कांई ढील! जीवता रैवौ।''

ओमजी सगळै भायां नैं ओळखता हा। नंबर री तपास करण सारू सैंग दो-दो, तीन-तीन वळा अठै आयोड़ा हा। धंधा-परवांण पूजती ओळखाण ही। दीखतो सळियो सुभाव। मीठी बोली। झीणी मुळक। डील री बणगट सूं अैड़ौ लखावतौ जाणै ट्रैक्टर रै पुरजां री गळाई किणी कारखानां में ई सरूप रौ निरमाण व्हियौ। मसीनां रै उनमान ई वांरी काया घड़ीजी। टाट री ठौड़ टाट। हेटै तीन कानी कड़बटीला बाळां री झालरी। गळा री ठौड़ गळौ। मुळक परवाण मुळक।

साम्हीं बैठा पांचूं मिनखां रा उणियारा निरखता बोल्या, ''अबै तौ नेहचौ व्हियौ। पण आखै मारग बस रा गटका खावता आया हौ। कीं सुस्तावौ। पाहरौ खावौ। ठाडौ पाणी पीवौ।''

इण मान-मनवार रै उपरांत वै घंटी बजाई। उण समचै ई अेक आदमी मांय आयौ। लस्सी लावण रौ आदेस व्हियौ। हाजरिया रै बारै नीसरतां ई ओमजी कह्यौ, ''थांरै घर रा दूध-दही री तो होड ई नीं व्है, पण दूजी मनवार ई कांई करां। पाणी सस्तै दूध। मिचळौ दही। अठै तौ फगत ठाडी हवा, ठाडौ पाणी, रबड़ री गीदियां अर बिजळी री चकाचूंध है। मिळावट रा ठाठ-भेळ रा गाजा-बाजा है। रिपियां साटै ई नीं धान मिळै अर नीं मुसाला। खावण-पीवण री मनवार करतां ई लाज आवै।''

अेक जणौ हंसतौ थकौ बोल्यौ, ''जे साचा मन सूं मनवार करणी चावौ तौ घणी ई ऊंची-ऊंची चीजां मिळै। सुरग रै देवतावां नैं ईसकौ व्है जैड़ी। मनवार करौ तौ अै चीजां है, नींतर लस्सी सूं काळजौ ठाडौ करणौ तौ दीसै ई है।''

सांनी साव सुभट ही। ओमजी जोर सूं हंसता थकां कैवण लागा, ''अठै दुकान में अै ऊंची चीजां नीं चालै! सिंझ्या तांई ढबौ तौ म्हारै ठरका जोग घरै सरबरा कर सकूं।''

''थांरै कैतां पाणी म्हांरी सरबरा तौ व्हैगी। औ माईतपणौ ई घणौ। अेकर ट्रैक्टर निजरां तौ बतावौ!''

''लस्सी आवै। पीयनै चालां।''

''लस्सी किसी पाछी व्हाड़ा में बड़ै! ट्रैक्टर देख्यां पछै काळजौ घणौ झरैला। वत्तौ स्वाद आवैला।''

ओमजी खुद साथै व्हीर व्हिया! कारखाना में ट्रैक्टर तौ त्यार-टंच पड़्यौ ई हौ। लाल-बंब फरगुसन टैक्टर। जाणै ममोलिया री ढिगली अेकठ व्ही! माथै निजर पड़तां ई पांचूं भायां रौ अंतस रंगीजग्यौ।

ट्रैक्टर माथै सावळ हाथ फेर आछी तरै निरख-निरखाय सगळा ई पाछा कमरा में आया। लस्सी री गिलासां टेबल रा काच माथै ढक्योड़ी पड़ी ही।

कुरसी माथै बैठतां ई ओमजी कह्यौ, ''भाईड़ां, जमानौ बदळियौ पण बदळियौ। पैलां तौ गांव में अेक ठाकर हौ, पण अबै तौ सगळा ई थांरै जैड़ा मोटा करसा ई ठाकर बणग्या। आजादी रा ठाट सगळा थांरै ई पांती आयग्या! छाछ-राबड़ी रा ई जांदा पड़ता जकौ अबै ऊंची-ऊंची चीजां पाणी रै उनमान खळकाइजै। हळ अर हींयड़ी मोलावतां जोर पड़तौ जका हजारूं रिपियां रौ ट्रैक्टर बपरावतां सोचौ ई नीं। काटीड़ां, आजादी रौ लावौ लेणौ व्है सो ले लीजौ। मन में मत राखज्यौ।''

चौथोड़ौ भाई बिचाळै ई बोल्यौ, ''कैण रा धूड़ रा लावा है। धान खाय नीठ पेट भरां। हजारूं पीढियां लग विखौ भुगतियौ, आज थांनै काणी रौ काजळ ई को सुहायौ नीं! भलौ व्है गांधी-बाबा रौ जकौ म्हांनै ई मिनखाजूण रौ साव लिरायौ। नींतर गांवां में बिजळी री मोटरां, रेडिया अर ट्रैक्टरां रौ कांई वास्तौ।''

''पण म्हांनै तौ अबै कागदां रा नोट खाय पेट भरणा पड़ैला! गिणिया दिनां सूं म्हां लोगां नैं तौ धान मिळणौ ई दूभर व्है जावैला।''

थे म्हांनै ट्रैक्टर पूरियां जावौ, म्हे थांनै धान पूरियां जावांला! चावौ तौ माहोमाह लिखत करलां।''

बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''कांई किणी नैं कीं नीं पूरै। भैंस खड़ खावै तौ आपरा पेट सारू। सै आप-आपरै मतलब रा छातीकूटा है। कोई आपरी गरज ट्रैक्टर बेचै अर कोई आपरी गरज ट्रैक्टर मोलावै।''

आपरै कानां आं सबदां रौ भणकारौ पड़्यौ तौ बडोड़ा भाई नैं लखायौ कै बात कीं अंवळी उळझगी! पाछौ तांतौ सांधण री चेस्टा करतौ थकौ कैवण लागौ, ''हां ओमसा, बात तौ थे साची ई फरमाई। बाबा रै परताप म्हांनै आजादी रै उपरांत सुख रौ साव तौ खासौ-भलौ आयौ! घर-घर धान रा ढिगला, धीणा री धेछाळा...!''

बिचाळै ई टाटियौ माथौ धूणता ओमजी कह्यौ, ''घर-घर री बातां झूठी! इणिया-गिणिया थां मोटोड़ा करसां री अवस मन जाणी व्ही।''

छोटकियौ भाई थोड़ौ-घणौ भणियोड़ौ हौ। बोल्यौ, ''मन जाणी तौ कांई व्ही, दुख रौ टूंपौ कीं खोळौ व्हियौ, इण सूं सोरौ सांस आयौ। सुख रा साव तौ हाल चांद ज्यूं घणा अळगा है।''

बिचेटियौ भाई फालतू री झिकाळ रौ निवेड़ौ करता थकां बोल्यौ, ''चांद सारू झांपळियां मारण में कीं सार नीं। मतलब री बात करौ। खीसां मांयला नोट काढ ओमजी नैं संभळावौ। अपां री चीजां देख-भाळ करनै हानै करौ! बगत तौ बातां करां तौ ई बीतै।''

जाणै अणछक भूल्योड़ी बात याद आयगी। अजेज खीसां में हाथ बड़िया। टेबल माथै नोटां री ढिगली व्ही। पचास घोड़ां री ताकत रै विलायती फरगुसन ट्रैक्टर रै सागै ट्राली, तवियां, झूलौ अर हेरौ। साठ हजार रिपियां रौ निंवतौ हौ।

अठी ओमजी नोटां नैं गिण-गिणाय दराज तालकै करया अर उठी सगळा भाईड़ा अेकण सागै उठिया अर आपरी चीजां हानै करण सारू कारखाना री सोय करी। बडोड़ा भाई रै कह्यां छोटकियौ भाई सुरंगी माळावां, साख्या सारू रातौ रंग, गुळ अर छ: रम री बोतलां खरीदण वास्तै बजार कानी व्हीर व्हैगौ। बाकी चारूं भाई टिकिया जकौ हमालां साथै जुतनै झपाझप ट्राली भरली। वै आपरै काम सूं निवड़िया जित्तै छोटकियौ भाई आयग्यौ। अणूता कोड सूं गुळ बेंच्यौ! माळावां सूं ट्रैक्टर सिणगारयौ! साम्हो-सांम साख्यौ कोरयौ! छोटकिया तीनूं भाई खामची डलेवर हा।

व्हीर व्हैतां ई खासौ दिन ढळग्यौ। सूरज आथूण दिस रै ओलै लुकण री त्यारी में इज हौ! अजमेर-जैपर सड़क वाळी चुंगी-चौकी सूं सूं धकै निकळतां ई खुली सड़क ही। फरफरावती माळावां सूं सिणगारियोड़ौ ट्रैक्टर धरर-धरर चालतौ हौ। माथै पांचूं भायां नैं अैड़ौ लखायौ जाणै सड़क री ठौड़ आभौ ई वांरै ट्रैक्टर रै तळै पाथरग्यौ व्है। अर सांम्हली धरती वांनैं नारेळां सूं ई साव छोटी लखाई। आथमतौ सूरज जाणै वांरा ई वारणा लेवतौ व्है। आखी दुनिया रा हरख वांरै हिवड़ै भरण लागौ। सोना रै फूलां रौ परस करनै जाणै ढळता सूरज री किरण सारथक व्ही। रूंख-बांठकां में चापळियोड़ा पंछी ट्रैक्टर री धरधराहट सुणनै कानी-कानी उडता तद वांनै अैड़ौ लखावतौ जाणै वांरै अंतस रौ आणंद ई आं पखेरुवां रौ रूप धरनै कानी-कानी उडै।

कै इत्ता में सूं-सूं करतौ तीखौ सरणाटौ वांरै कानां खणकियौ। झिझकनै अठी-उठी जोयौ। पांखां थाम्योड़ौ अेक बाज नीचौ उतरयौ अर देखतां-देखतां सिणतरा रै पाखती चापळियोड़ा अेक धोळा सुसिया नैं आपरै पंजा में झांप पाछौ उडग्यौ। पांचूं ई अेकण सागै हंसनै अेक दूजा रै साम्हीं जोयौ। बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''जोग किणी भाव नीं टळै। इणी सिणतरा रै पसवाड़ै बाज रै पंजां इण सुसिया री मौत लिख्योड़ी ही।''

बाज अदीठ व्हियौ जित्तै वै उठी देखता रह्या। ट्रैक्टर री धरधराहट चालू ही। नाळा री ढळांत रै बीचोंबीच पूगतां ई चौथोड़ौ भाई बोल्यौ, ''नीं-नीं करतां ई खासौ अबेळौ व्हैगौ। पण तौ ई सांतरै मौरत रौ टाणौ सजग्यौ। गांव सूं वहीर व्हैतां सुगन ई टाळका व्हिया हा।''

चढांत ढळतां ई वांनै दो-अेक खेतवा धकै साइकिल चढ्यां अेक मोट्यार निगै आयौ! अर उठी मोट्यार नें कीं धरधराहट सुणीजी तौ वौ लारै मुड़नै जोयौ— कोई ट्रैक्टर आवै दीसै। वौ तुरंत पाछौ मुड़नै खाथा-खाथ पैडल दाबिया। ट्रैक्टर वाळां सूं उणरी वा खथावळ छानी नीं री। छेती बधतां ई वै आ बात लखग्या। ट्रैक्टर चलावतौ भाई बोल्यौ, ''कालौ कठा रौ ई! कित्ता ई आंचै पैडल मारै तौ कांई व्है। ट्रैक्टर सूं धकै जायनै कित्तोक जावैला!''

वौ थोड़ी-सी रेस वळै बधायी। ट्रैक्टर री धरधराहट ई वत्ती व्ही। साइकिल वाळा रै कानां ई इण बात रौ बेरौ पड़ग्यौ। वौ वळै आयै-आयै पैडल दाब्या। कीं छेती वळै बधगी।

तर-तर बधती छेती ट्रैक्टर चलावता भाई रै हीये झरी कोनी! वौ वळै कीं रेस खांची। छोटकियौ भाई बोल्यौ, ''मां रौ मांटी, सेवट तौ थाकैला। थोड़ी ताळ राजी व्है तौ छौ व्हैतौ।''

विचेटियौ भाई बोल्यौ, ''उघाड़माथ्या छोरां री अैड़ी इज अंवळी बुध व्है!''

धरधरातौ ट्रैक्टर सड़क नैं सवेटतां दौड़तौ हौ। सुरंगी माळावां हवा में वत्ती फरफरावण लागी। बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''मतै ई आहळैला। क्यूं बिरथा रेस खांचै! ट्रैक्टर आगै बापड़ी साइकिल री कांई जिनात।''

चीं-चीं करती अेक तीखी चींचाट अणछक वांरै कानां सुणीजी। बिल में बड़ता-बड़ता ऊंदरा नैं अेक चील हांकरतां झांप लियौ। वा चीं-चीं उण मरता ऊंदरा री ही। थोड़ी ताळ में चीं-चीं री आवाज इण दुनिया सूं बिलायगी।

सूरज री आधी कोर डूबगी ही। अबै वौ ई रात-भर तांई बिलाय जावैला। डूबता सूरज रै ओळूं-दोळूं गुलाल ई गुलाल पाथरग्यौ। जाणै ट्रैक्टर रै कसूंबल रंग रौ ई उण ठौड़ प्रतम पड़ै।

डलेवर रै टाळ च्यारूं भाई डूबता सूरज सूं मीट हटाय धकै जोयौ— अरै! साइकिल अर ट्रैक्टर री छेती तौ तर-तर बधती ई जावै! सगळां रै मन में अेकण सागै अेक बात ई रड़कै— सौ-दो सौ रिपल्ली री साइकिल अर साठ हजार रिपियां रौ ट्रैक्टर। आ कोई होड में होड! ऊंदरौ हाथी सूं आथड़ै!

दूजोड़ौ भाई बोल्यौ, ''फींपरौ फाटनै मरग्यौ तौ घरवाळां सूं छेती पड़ जावैला।''

चौथोड़ौ भाई बोल्यौ, ''राम जाणै घरवाळां सूं छेती कद पड़ै, पण अपां रै ट्रैक्टर सूं तौ छेती खासी बधती ई जावै है।''

छोटकियौ भाई थोड़ी रेस वळै खांची। नवौ अटंग ट्रैक्टर हौ। पूरी रेस खंचणी सावळ कोनी।

साइकिल वाळौ लारै मुड़नै जोयौ। साचाणी वौ खासौ आगै निकळग्यौ हौ। वौ जोस अर हूंस में वळै जोर सूं पैडल दाब्या। पग तौ जाणै भरणाटै चढग्या व्है। डूंगर सूं खळकता झरणा रै वेग साइकिल सड़क माथै रळकती ही। जाणै कोई बतूळियौ साइकिल रौ रूप धारण कर लियौ व्है अर कै वौ मोट्यार वतूळिया माथै सवार व्हैगौ व्है।

ट्रैक्टर माथै बैठा सगळा भाई ध्यान सूं देख्यौ। साचाणी छेती खासी बधगी ही अर तर-तर बधती ई जावै। माळावां सूं सिणगारयोड़ौ विलायती ट्रैक्टर! पचास घोड़ां री ताकत रौ! साठ हजार रिपियां री लागत रौ! अर आ दोसौ रिपल्ली री साइकिल! अर औ कॉलेजियौ छोरौ! उघाड़ै माथै! नेकर पैरयोड़ौ।

हवा रौ जोर सूं फटकारौ लाग्यौ तौ अेक माळा रौ डोरौ तूटग्यौ। वा चारूं कानी अठी-उठी फरफरावण लागी। कदैई दोवड़ी व्है जाती। कदैई पाधरी व्है जाती। अेक माळा रौ डोरौ वळै तूटग्यौ।

ट्रैक्टर चलावता छोटकिया भाई रै काळजै फरफरावती माळावां रै मिस जाणै झाटी रा सडिंदा लागा। वौ दांत पीसतौ-पीसतौ ई पूरी रेस खांची! तोप सूं छूट्या गोळा रै वेग ट्रैक्टर दौड़ण लागौ। हवा में चारूंमेर धरधराहट ई धरधराहट गूंजण लागी! ट्रैक्टर तळै पाथरयोड़ौ आभौ पाछौ पैलां सूं ई ऊंचौ— घणौ ऊंचौ चढग्यौ हौ।

कीं छेती कम पड़ी! वळै कम पड़ी! हां, अबै तौ खासी कम पड़गी।

टोपसी रै उनमान छोटी लागती दुनिया फगत दो ठौड़ सिवटनै बिखरगी ही। ट्रैक्टर अर साइकिल-सवार टाळ वांनैं दुनिया री किणी तीजी बात रौ ध्यान नीं हौ। साठ हजार रिपियां रौ ट्रैक्टर अर दो सौ रिपल्ली रौ खीलौ!

जोग री बात कै लगती दो मिलटरी री गाडियां साम्हीं आई तौ ट्रैक्टर री रेस धीमी करणी पड़ी। बाईसिकल वाळौ मोट्यार औ ताखौ राख खासौ आगै निकळग्यौ।

बिचेटियौ भाई बोल्यौ, ''अै उघाड़माथ्या छोरा कित्ता ओटाळ व्है! गाडियां रौ उकरास लगाय सपाक आगै बधग्यौ।''

बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''बापड़ौ थोड़ी ताळ मोदीजै तौ छौ मोदीजतौ! कित्तोक आगै जावैला। सेवट तौ सांस तूटैला ई। बावळौ, आपरी जवानी गाळै! नसां ढीली पड़गी तौ लुगाई रै काम रौ ई नीं रैवैला। आ जवानी कोई साइकिल माथै उतारण सारू नीं व्है।''

खुली सड़क मिळतां ई छोटकियौ भाई पाछी पूरी रेस खांचली। जाणै सोर नैं बत्ती बतायी! हवा नैं अपड़ण सारू झांपळियां भरतौ ट्रैक्टर जाणै आंधी रौ इज रूप बणग्यौ! अर तर-तर छेती भांगती ई गी!

ट्रैक्टर री धरधराहट सलबै सुणी तौ वौ अेकर वळै लारै मुड़नै जोयौ। रीस में तणकारौ देय पाछौ मुड़्यौ। फिड़कती रै उनमान उणरा दोनूं पग चकरी चढिया सो चढता ई गियौ। अबै उणनैं थोड़ौ-थोड़ौ परसेवौ होवण लागौ हौ। वौ राजस्थान रौ सबसूं तेज साइकिल चलावणियौ हौ। हां, वौ ई अेक मिनख हौ। बूकियां री ठौड़ बूकिया। पगां री ठौड़ पग। अर सांस री ठौड़ सांस! सपनां री ठौड़ सपना।

वौ नित साठ-सित्तर मील साइकिल बगड़ावण करतौ। लारला दो महीनां सूं अभ्यास करै। धकलै महीनै अखिल भारतीय साइकिल दौड़ में अगवाणी रैयग्यौ तौ कदास पैरिस जावण री बारी आ सकै। आज इण ट्रैक्टर री होड में उणरी परख व्है जाणी है। दांत पीसनै आपरै करार सूं ई सवाया पैडल दाब्या।

साइकिल चलावण री लकब अर आंट देख उणरै साथै भणती अेक साथण पैलपोत चिपतां ई सीधौ ब्यांव रौ प्रस्ताव धरयौ! वौ पाछौ सुभट हां-ना रौ कीं पड़ूत्तर नीं दे सक्यौ! थोड़ा दिन साथै रह्यां, माहोंमाह वंतळ करयां, अेक-दूजै रै अंतस नैं सावळ ओळखियां मतै ई सगळी बातां सुभट व्हैगी। अखिल भारतीय साइकिल दौड़ सूं निवड़्यां उपरांत ब्यांव रौ कौल कर लियौ! वौ विखा में पळ्योड़ौ हौ। वा आसूदा घर में रम्योड़ी ही। पण दोनूं ई अेक-दूजा माथै जीव देता। अेक दांत रोटी टूटती! ब्यांव री लाखीणी रात वांरी सेजां चांद उतरैला!

अणछक वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं भळकियौ! जाणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरौ करार दस गुणा बधग्यौ! पगां रै जाणै पांखां लागगी। भलां वाहेली री अदीठ निजर सूं वत्ती इण निरजीव ट्रैक्टर री कांई जिनात! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती ई गी! देखतां-देखतां पैलां सूं ई डोढी छेती पड़गी। ट्रैक्टर री रेस पूरम-पूर खांच्योड़ी ही। इण सूं आगै किणी रौ कीं जोर नीं हौ! पांचूं ई भयां रौ मन मठोठी खावण लागौ। चारूंमेर री सूंसाड़ा भरती हवा धरधराहट रा पळेटा में अळूझगी ही! आखी दुनिया रौ राज हाथां में आयोड़ौ देखतां-देखतां खुस जावैला!

तोप रै गोळा रै वेग ट्रैक्टर मलपतौ हौ। साइकिल वाळा उघाड़माथ्या छोरा रै पगां में जाणै कोई वतूळियौ सरण लेली व्है! वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं झबूका भरतौ हौ। छेती तर-तर बधण लागी। नीं तौ उणरौ फींफरौ फाट्यौ अर नीं उणरौ सांस तूटौ। पण ट्रैक्टर रै टंग्योड़ी आधी माळावां तूट-तूटनै हेटै खिरगी। ट्रैक्टर माथै बैठा वै काटी दूजौ जोर ई कांई करता!

पण अदीठ रै जोर अर जोग रौ किणी नैं की बेरौ नीं हौ! वतूळियौ बण्योड़ा पग अणछक खाली घूमण लागा। साइकिल री चैन उतरगी ही। तौ ई वौ कीं हाबगाब नीं व्हियौ। ट्रैक्टर रै वेग रौ कूंतौ उणरा पग मतै ई कर लियौ हौ। वाहेली रौ उणियारौ च्यारूं कानी दीप-दीप करण लागौ। इण ताकत सूं ऊंची तौ दुनिया में दूजी कीं ताकत नीं। वौ तुरत साइकिल थाम फूंदी रै उनमान हेटै उतरयौ। स्टैंड माथै ऊभी करनै वौ निरांत सूं चैन चाढण लागौ।

तर-तर छेती कम पड़ती गी! ट्रैक्टर री धरधराहट अर पांचूं भायां री खुसी हवा में मावती नीं ही। भलां जोग रा जोर नैं कुण पूगै! साठ हजार रिपियां री लाज रै ढाका-ढूमौ व्हैगौ। इण भांत रै झूठा संतोख सूं कोई आपरौ मन पोखै तौ उणरौ कुण कांई करै!

ट्रैक्टर री धरधराहट साव सलबै सुणीजण लागी। चैन चाढण री हळफळाई खथावळ में साम्हीं वत्तौ मोड़ौ व्हैतौ गियौ! अर देखतां-देखतां ट्रैक्टर तौ साव पाखती आयग्यौ! पण उणनैं तौ आपरै करार अर वाहेली रै अदीठ उणियारा रौ अंजस हौ।

धरधरातौ ट्रैक्टर अड़ोअड़ आयनै धकै निकळग्यौ। पांचूं भाई मिनखां री बोली में कीं जोर सूं अेकण सागै बड़बड़ाया। उण वेळा ई कागलां री जान क्रांव-क्रांव करती माथा कर निकळगी। ट्रैक्टर री धरधराहट अर कागलां री क्रांव-क्रांव रै बिचाळै मिनखां री बोली सावळ उघड़ी कोनी।

वौ चैन चाढ साइकिल माथै चढ्यौ जणां ट्रैक्टर दोयेक खेतवा धकै निकळग्यौ हौ। च्यारूं भाई लारै मुड़नै देखण लागा। सोचण लागा कै गैलौ चैन चाढण रौ मिस करै। कदास अबै होड करण री हूंस ठाडी पड़गी दीसै। पण वौ तौ साइकिल माथै चढतां ई पाछौ वतूळियौ बणग्यौ! अर छेती तर-तर कम होवण लागी सो व्हैती ई गी।

मगसा-मगसा अंधियारा में कुदरत बुरीजण लागी ही। च्यारूं भाई आंख्यां फाड़-फाड़ देखण लागा। आ साइकिल तौ वळै धकै निकळ जावैला!

रेस पूरमपूर खांच्योड़ी ही। ट्रैक्टर रै वेग सूं आगै वांरौ कीं जोर नीं हौ। सगळा ई दांत पीसण लागा।

ट्रैक्टर रा कसूंबल रंग माथै मगसी झांई घिरण लागी। छोटकियौ भाई पूछ्यौ, ''उघाड़माथ्यौ कठैक आवै?''

च्यारूं भाई दांत पीसता थका बोल्या, ''औ तौ वळै हांकरतां ट्रैक्टर सूं धकै निकळ जावैला।''

''अबै तौ इणरौ बाप ई नीं निकळ सकै।'' आ बात कैतां ई छोटकिया भाई रै कानां बाज वाळौ सरणाटौ अर ऊंदरा वाळी चीं-चीं बारी-बारी सूं गूंजण लागी। थोड़ी ताळ उपरांत अेक कान में चीं-चीं अर दूजा कान में सरणाटौ ढबियौ ई नीं! बिरमांड री हवा जाणै इण गूंज सूं चीरीज जावैला! ट्रैक्टर रौ धरधराटौ ई इण गूंज में डूबग्यौ हौ!

अर उठी साइकिल वाळा उघाड़माथ्या री आंख्यां साम्हीं अेक दूजौ ई बिरमांड पळकतौ हौ! ठौड़-ठौड़ वाहेली रा उणियारा झमका भरण लागा— छिड़्या-बिछड़्या तारां में, रूंख-बांठकां में, धोरा में अर साम्हीं जावता ट्रैक्टर में, ट्रॉली में! आज उणरी परख व्है जाणी है! जे ट्रैक्टर सूं धकै निकळग्यौ तौ वेगौ ई ब्यांव कर लेला। वा मान जावै तौ कालै! नींतर पिरसूं। परलै रोज। जद-कद ई उणरौ मन व्है!

अबै तौ धकै निकळण में वारौ ई कांई! आखी दुनिया उणरा हथळेवा री मूठी में समाय जावैला। आंख्यां साम्हीं सोवन सपनां रौ बेजौ बुणीजण लागौ।

अर उठी जाणै बाज रै सरणाटा अर चीं-चीं री गूंज सूं हवा रौ रेसौ-रेसौ टूंपीजण लागौ हौ!

च्यारूं भाई किड़किड़ियां चाबता अेकण सागै बोल्या, ''अधबेरड़ौ उघाड़माथ्यौ छोरौ तौ आज अपां रै पोतिया री जबरी सान बिगाड़ी!'' पछै वै छोटकिया भाई नैं अेक जुगत बताई, ''पाखती आवतां ई ट्रैक्टर आडौ करदै! औ ओटाळ ई कांई जाणैला कै...!''

बाज रा सरणाटा अर ऊंदरा री चीं-चीं नैं मिनखां री वाणी रौ अरथ मिळग्यौ!

अर उठी उणरी वाहेली रा उणियारा रौ उजास ई खासौ बधग्यौ हौ। अेक-अेक उणियारौ साव सुभट दीखण लागौ।

अबै तौ ट्रॉली रै साव अड़ोअड़ पूगग्यौ। बाज रै सरणाटा अर ऊंदरा री चीं-चीं छोटकिया भाई रै माथा में चापळनै मून धारली ही।

वतूळिया रै वेग सूं दौड़ती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सूं टकराई। अेकर आंख्यां साम्हीं बीजळी पळकी। पछै दीप-दीप करतौ अेक-अेक उणियारौ बडौ व्हैतौ गियौ! ट्रैक्टर रै लारलौ काळौ टायर माथा रौ गिरड़कौ काढ दियौ! सगळा उणियारा अेकदम बडा व्हैगा!

हवा में वळै मिनखां री बोली गुणमुणाई— मां रौ मांटी, ट्रैक्टर सूं धकै जावण री हूंस राखै।

छोटकियौ भाई कीं भण्योड़ौ हौ। तुरंत अेक जुगत विचारी। थोड़ी अळगी भांय जाय ट्रैक्टर ढाब्यौ। थैलां मांय सूं बोतल काढतौ बोल्यौ, ''बापड़ा नैं थोड़ी रम तौ पावां।''

पछै मिनख रै पगां-पगां वौ धकै बधियौ! साइकिल वाळा रै पाखती जाय बोतल रौ ढक खोल्यौ! उणरै मूंडा में आधी बोतल दारू ऊंधायौ! पछै माथा रै पाखती बोतल फोड़ वौ दौड़तौ-दौड़तौ ट्रैक्टर माथै चढग्यौ! धरधरातौ ट्रैक्टर धकै बधग्यौ! मोड़ा माथै ऊभी लुगायां बाट निहारती व्हैला! घरै गियां वांनैं कोड सूं वधावैला!

हवा में मिनखां री हंसी रौ ठहाकौ गूंज्यौ!

अर उठी काळी सड़क रै माथै अेक चित्राम किणी उम्दा पारखी नैं उडीकतौ हौ। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रौ धोळौ भेजौ! फूटोड़ी बोतल रा टुकड़ा। किणी मोट्यार री ल्हास! धोळौ नेकर! ठौड़-ठौड़ रगत रा छाबका! सोसनी बंडी! सपनां रौ किचड़कौ! मोह-प्रीत रा रेळा! चित्राम कीं बेजा नीं हौ!

पण दोनूं महाजुद्धां रा चित्राम, हिरोसिमा, नागासाकी रा चित्राम अर बंगलादेस रा बेजोड़ चित्राम—इण नाकुछ चित्राम सूं घणा-घणा ऊंचा हा। घणा-घणा रूपाळा हा। औ चित्राम वांरी होड तौ नीं कर सकै, पण गिंवारू हाथां कोरयोड़ौ औ छोटौ चित्राम ई कीं बेजा नीं हौ!

हां, वै पांचूं ई मिनख हा! मिनखां री बोली बोलता अर मिनखां री ई हाली हालता!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

लांठोड़ा=बडौ, बळवान। पोतिया=साफा, पाघड़्यां। हलीलौ=धंधौ, कामकाज। फाचरै=ताबै, काबू में। फळिया=फळ्या-फूल्या, बडा होया। बनापाती=वनस्पति, वन रा फूल-फळ अर पानड़ा। सुभट=साफ, स्पष्ट। पळकती=चमकती। पतियारौ=भरोसौ, विस्वास। बडभागियां=भाग्यसाली। ममोलिया=वीर बहूटी, मेह री डोकरी, बिरखा में पैदा होवणियौ मखमली रातौ जीव। झिकाळ=बिरथा बहस। रातौ=लाल। खामची=पारंगत, हुंसियार। चापळियोड़ौ=दुबक्योड़ौ, दोलड़ौ व्हियोड़ौ। पाथरग्यौ=पसरग्यौ, फैलग्यौ। मीट=दीठ, निजर। सडिंदा=ताजणै री फटकार, कौड़ा रा सड़ीड़। ताखौ=मौकौ। सलबै=साव नैड़ी, अेकदम कनै। आसूदा=राता-माता। फींफरौ=फेफड़ौ, आंतड़्यां। हाबगाब=हाकबाक, आकळ-बाकळ। बांठकां=झाड़-झंखाड़। अधबेरड़ौ=बिगड़ैल, अधकालौ। गिरड़कौ=चिगद देवणौ। छाबका=धब्बा, दाग।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हिरोसिमा अर नागासाकी किण देस रा महानगर है ?

(अ) जापान (ब) इटली

(स) भारत (द) जर्मनी

( )

2. पांचूं भाई जोधाणै किण सारू गया हा ?

(अ) सगपण सारू (ब) ट्रैक्टर लेवण सारू

(स) ब्यांव में (द) घूमण सारू

( )

3. पांचूं भायां रै रीस रौ कांई कारण हौ ?

(अ) ट्रैक्टर नीं मिळणौ (ब) पईसा गमणा

(स) साइकिल वाळै रौ आगै निकळणौ (द) किणी सूं राड़ रै कारण

( )

4. 'अलेखूं हिटलर' कहाणी रा कहाणीकार कुण है ?

(अ) अन्नाराम सुदामा (ब) डॉ. कल्याणसिंह

(स) मालचन्द तिवाड़ी (द) विजयदान देथा।

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. पांचूं भायां रौ काम धंधौ चालतौ ?
2. ट्रैक्टर रौ मोल कांई हौ ?
3. साइकिल वाळै नैं आखिर ट्रैक्टर हेटै कुण दियौ ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पांचूं भायां रौ रूप-रंग कहाणी में किण भांत बखाणीज्यौ है ? लिखौ।
2. ''भाइड़ां, जमानौ बदळियौ पण बदळियौ...।'' ओमजी री इण बात माथै चौथोड़ै भाई कांई विचार राख्या ?
3. साइकिल चलावती बगत साइकिल वाळा रै मन में कांई कल्पना अर सपना चालै हा ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'अेलखूं हिटलर' मांय कहाणीकार किण हिटलरां री बात करै ? आज रै समाज में आंरी ओळखाण करावौ।
2. कहाणी रै तत्त्वां रै आधार माथै अलेखूं हिटलर कहाणी री विरोळ करौ।
3. विजयदान देथा री भासा अर सैली री इण कहाणी रै आधार माथै टीप लिखौ।

नीचै दिरीज्योड़ा गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. अणछक वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं भळकियौ! जाणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरौ करार दस गुणा बधग्यौ! पगां रै जाणै पांखां लागगी। भलां वाहेली री अदीठ निजर सूं वत्ती इण निरजीव ट्रैक्टर री कांई जिनात! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती ई गी!

2. वतूळिया रै वेग सूं दौड़ती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सूं टकराई। अेकर आंख्यां साम्हीं बीजळी पळकी। पछै दीप-दीप करतौ अेक-अेक उणियारौ बडौ व्हैतौ गियौ! ट्रैक्टर रै लारलौ काळौ टायर माथा रौ गिरड़कौ काढ दियौ! सगळा उणियारा अेकदम बडा व्हैगा!

3. अर उठी काळी सड़क रै माथै अेक चित्राम किणी उम्दा पारखी नैं उडीकतौ हौ। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रौ धोळौ भेजौ! फूटोड़ी बोतल रा टुकड़ा। किणी मोट्यार री ल्हास! धोळौ नेकर! ठौड़-ठौड़ रगत रा छाबका! सोसनी बंडी! सपनां रौ किचड़कौ! मोह-प्रीत रा रेळा! चित्राम कीं बेजा नीं हौ!